लिङ्गाष्टकं स्तोत्रम्

॥ लिङ्गाष्टकं स्तोत्रम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चित लिगं निर्मलभाषितशोभित लिंग ।
जन्मजदु:खविनाशक लिंग तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥१॥

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जिनकी ब्रह्मा, विष्णु एवं देवताओं द्वारा अर्चना की जाती है, जो सदैव निर्मल भाषाओं द्वारा पूजित हैं तथा जो लिंग जन्म-मृत्यु के चक्र का विनाश करता है।

देवमुनिप्रवरार्चित लिंगं, कामदहं करुणाकर लिंगं ।
रावणदर्पविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥२॥

देवताओं और मुनियों द्वारा पूजित लिंग, जो काम का दमन करता है तथा करुणामय शिव का स्वरूप है, जिसने रावण के अभिमान का भी नाश किया, उन सदाशिव लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वसुगंन्धिसुलेपित लिंगं, बुद्धिविवर्धनकारण लिंगं ।
सिद्धसुरासुरवन्दित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥३॥

सभी प्रकार के सुगंधित पदार्थों द्वारा सुलेपित लिंग, जो बुद्धि का विकास करने वाला है तथा सिद्ध, सुर और असुरों द्वारा वन्दित है, उन सदाशिव लिंग को प्रणाम।

कनकमहामणिभूषित लिंगं, फणिपतिवेष्टितशोभित लिंगं ।
दक्षसुयज्ञविनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥४॥

स्वर्ण एवं महामणियों से विभूषित, सर्पों के स्वामी से शोभित सदाशिव लिंग, जो दक्ष के यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, आपको प्रणाम।

कुंकुमचंदनलेपित लिंगं, पंङ्कजहारसुशोभित लिंगं ।
संञ्चितपापविनाशिन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥५॥

कुंकुम एवं चन्दन से शोभायमान, कमल हार से सुशोभित सदाशिव लिंग, जो संचित पापों से मुक्ति प्रदान करने वाले हैं, उन सदाशिव लिंग को प्रणाम।

देवगणार्चितसेवित लिंग, भवैर्भक्तिभिरेवच लिंगं ।
दिनकरकोटिप्रभाकर लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥६॥

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ, जो सभी देवों एवं गणों द्वारा शुद्ध विचार और भावों से पूजित हैं तथा करोड़ों सूर्य के समान प्रकाशित हैं।

अष्टदलोपरिवेष्टित लिंगं, सर्वसमुद्भवकारण लिंगं ।
अष्टदरिद्रविनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥७॥

आठों दलों में मान्य और आठों प्रकार की दरिद्रता का नाश करने वाले सदाशिव लिंग सभी प्रकार के सृजन के परम कारण हैं - आपको प्रणाम।

सुरगुरूसुरवरपूजित लिंगं, सुरवनपुष्पसदार्चित लिंगं ।
परात्परं परमात्मक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं ॥८॥

देवताओं एवं देवगुरु द्वारा स्वर्ग की वाटिका के पुष्पों से पूजित, परमात्मा स्वरूप और सभी व्याख्याओं से परे सदाशिव लिंग को प्रणाम।

लिङ्गाष्टकं स्तोत्रम्